अकबर बीरबल की कहानी
"जैसा सवाल वैसा जवाब"

जैसा सवाल वैसा जवाब पाठ का सारांश

जैसा सवाल वैसा जवाब पाठ या कहानी में बादशाह अकबर के मंत्री बीरबल की बुद्धिमानी का रोचक दृष्टांत चित्रित किया गया है | इस कहानी के अनुसार, बादशाह अकबर अपने मंत्री बीरबल को बहुत पसंद करते थे | बीरबल की बुद्धि के आगे सबकी बोलती बंद हो जाती थी | इस कारण कुछ दरबारी बीरबल के प्रति ईर्ष्या की भावना रखते थे | वे बीरबल को नीचा दिखाने के तरीके सोचते रहते थे |

बादशाह अकबर के दरबार में ख्वाजा सरा नाम का एक दरबारी रहता था, जिसे अपनी विद्या और बुद्धि पर बहुत अभिमान था | वह अपने आगे बीरबल को निरा बालक और मूर्ख समझता था | एक दिन ख्वाजा सरा ने बीरबल को मूर्ख साबित करने का निश्चय किया

। उसने कुछ कठिन प्रश्नों का संग्रह कर लिया। उसे पूरा विश्वास था कि बीरबल उन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाएगा। तत्पश्चात् बादशाह अकबर की नज़र में उसकी इज्जत बढ़ जाएगी।

ख्वाजा सरा अचकन-पगड़ी पहनकर दाढ़ी सहलाते हुए बादशाह अकबर के पास पहुँचा। उन्हें तीन सवाल देकर कहा कि उनके जवाब बीरबल से पूछे

ताकि उसके
दिमाग की गहराई का पता चल सके | वह स्वयं को बड़ा बुद्धिमान समझता है |

ख्वाजा सरा के अनुरोध पर बादशाह अकबर ने बीरबल को बुलाया और कहा कि परम ज्ञानी ख्वाजा साहब तुमसे तीन प्रश्न पूछना चाहते हैं | क्या तुम इनके उत्तर दे सकोगे ? इसपर बीरबल ने कहा --- " जहाँपनाह ! जरूर दूँगा | खुशी से पूछें |"

बादशाह अकबर ने बीरबल से ख्वाजा का पहला प्रश्न पूछा --- "संसार का केन्द्र कहाँ है ?" बीरबल ने तुरंत जमीन पर अपनी छड़ी गाड़कर उत्तर दिया, " यही स्थान चारों ओर से दुनिया के बीचों-बीच पड़ता है | यदि ख्वाजा साहब को विश्वास न हो तो वे फीते से

सारी दुनिया को नापकर दिखा दें कि मेरी बात गलत है।"

अकबर ने दूसरा प्रश्न पूछा --- " आकाश में कितने तारे हैं ?" बीरबल ने एक भेड़ मँगवाकर कहा, " इस भेड़ के शरीर में जितने बाल हैं, उतने ही तारे आकाश में हैं। ख्वाजा साहब को इसमें कुछ संदेह लगता है, तो वे बालों को गिनकर तारों की संख्या से तुलना कर लें।"

तीसरा सवाल था --- " संसार की आबादी कितनी है ?" बीरबल ने कहा --- " जहाँपनाह! संसार की आबादी पल भर में घटती-बढ़ती रहती है। क्योंकि हर पल लोगों का मरना-जीना लगा ही रहता है। इसलिए यदि सभी लोगों को एक जगह इकट्ठा किया जाए तभी

उनको गिनकर ठीक-ठीक संख्या बताई जा सकती है |" अकबर तो बीरबल के उत्तरों से संतुष्ट हो गए, पर ख्वाजा साहब बीरबल के उत्तरों से संतुष्ट नहीं हुए | उसने बीरबल से कहा " ऐसे गोलमोल जवाबों से काम नहीं चलेगा जनाब |" तभी बीरबल ने कहा " ऐसे सवालों के ऐसे ही जवाब होते हैं | पहले मेरे जवाबों को गलत साबित कीजिए, तब आगे बढ़िए |" ख्वाजा साहब से आगे कुछ बोलते नहीं बना...||

5